वैस्कुलर क्लोजर डिवाइस द्वारा मरीज का डबल वाल्व री-प्लेसमेंट सर्जरी

मुंबई। मुंबई की पहली डबल वॉल्व री-प्लेसमेंट सर्जरी मुंबई के लीलावती अस्पताल में सफलतापूर्वक की गई है। वाल्वुलर हृदय रोग से पीड़ित एक बुजुर्ग व्यक्ति का ऑपरेशन एक नवीन वैस्कुलर क्लोजर डिवाइस से किया गया है। इस सर्जरी से बुजुर्ग को नई जिंदगी मिली है। लीलावती अस्पताल में इंटरवेंशनल स्ट्रक्चरल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. रविंदर सिंह राव, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. विद्या मुरलीकर, डॉ आनंद राव और एनेस्थेटिस्ट डॉ. नम्रता कोठारी ने मिलकर इस सर्जरी को सफल बनाया है।कर्नाटक के रहने वाले सुबोध मिश्रा को हार्ट वाल्व की बीमारी थी। 14 साल पहले उनकी ओपन हार्ट सर्जरी हुई थी। इस समय महाधमनी और माइट्रल दोनों वॉल्व बदले गए थे। लेकिन, कुछ महीनों से उन्हें सांस लेने में तकलीफ, नींद न आना और चलने में धकान की समस्या हो रही थी। हालत बिगड़ने पर परिवार वालों ने उन्हें लीलावती अस्पताल में भर्ती कराया।लीलावती अस्पताल में हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. विद्या मुरलीकर ने मरीज की 2-डी इको की जांच की। मरीज के माइट्रल वाल्व में रिसाव और महाधमनी वाल्व में सिकुड़न थी। मेडिकल भाषा में इसे स्टेनोसिस कहा जाता है। यह स्थिति हृदय से शरीर तक रक्त के प्रवाह को बाधित करती है। इसलिए खून वापस फेफड़ों में जा रहा था। इससे फेफड़ों में तरल पदार्थ भर गया। इसलिए मरीज को तत्काल दोनों वाल्व बदलने की जरूरत है। वाल्व प्रतिस्थापन के लिए मरीज को टीएवीआर और टीएमवीआर प्रक्रियाओं की सिफारिश की गई थी। हालाँकि, इस प्रक्रिया से पहले मरीज का सीटी स्कैन किया गया था।लीलावती अस्पताल में इंटरवेंशनल स्ट्रक्चरल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. रविंदर सिंह राव ने कहा कि , एक ही समय में दोनों वॉल्व बदलने की यह सर्जरी चुनौतीपूर्ण है। हालाँकि, दोनों वाल्व प्रतिस्थापन से रोगी को अधिकतम लाभ मिलता है। स्ट्रोक को रोकने के लिए मस्तिष्क धमनियों में एक फिल्टर लगाया गया था। ऊरु धमनी (कमर वाहिका) में एक बड़ा आवरण रखा गया था। ट्रांसकैथेटर महाधमनी वाल्व प्रतिस्थापन (टीएवीआर) किया गया। ऊरु शिरा में एक और आवरण रखा गया। एक सेप्टल पंचर किया गया और माइट्रल वॉल्व को सफलतापूर्वक बदल दिया गया।